मिशन शिक्षण संवाद

गीतांजलि सृजन

अंक : 32 **माह : जुलाई 2025**

लोकगीत स्पेशल

गीतकार
अरविन्द कुमार सिंह (स०अ०)
प्रा० वि० धवकलगंज
बड़ागाँव, वाराणसी

संकलन - मिशन शिक्षण संवाद गीतांजलि टीम

मिशन शिक्षण संवाद गीतांजलि सृजन

माह जुलाई 2025

लोकगीत

चला-चलीं सजनी हो खेतवा के गोंड़ आईं.....

788

जल्दी से घरवा के काम निपटाइ ल,
फइलल किरिनियां क ढेर।
चला-चलीं सजनी हो खेतवा के गोंड़ आईं,
नाहीं हो जाई अबेर।।

खेतिया-किसनियां ही हवुए सहारा,
एकरे सिवा नाहीं हौ कउनो चारा।
अपने सपनवाँ के अपने से गढ़ि ल,
होई हो फिर से सवेर।।
चला-चलीं सजनी.....

करबे निराई त चहकी फसलिया,
लगी हो सुन्दर अनजवा क बलिया।
हर्षित हो मनवां भुलाइ सारा दुखवा,
निधि पाई सुखवा क फेर।।
चला-चलीं सजनी.....

बाल-गोपाल आपन पढ़-लिख लेइहँ,
आशीष माई-बाबू सदा देइ जइहँ।
एहि मेहनतिया से होई अन्न वर्षा,
बदल में किस्मत लगी न हो देर।।
चला-चलीं सजनी.....

रचना- अरविन्द कुमार सिंह (स०अ०)
प्रा० वि० धवकलगंज
बड़ागाँव, वाराणसी

मिशन शिक्षण संवाद गीतांजलि सृजन

माह जुलाई 2025

लोकगीत

बड़ा नीक लागेला पंखा के हवा.....

789

दरवाजा बंद बाटे, खिड़की भी स्वाहा।
बड़ा नीक लागेला, पंखा के हवा।।

जुल्मी गरमियां ई हमके सतावे,
मनवां के सुख और चैन बिसरावे।
ध्यान न लगे कहीं केतनो सधावा।।
बड़ा नीक लागे.....

बिजली नाहीं बा कि ए सी चलाईं,
कूलर बिगड़ के भयल हरजाई।
पत्ता न तनिक डोल, रामजी बचावा।।
बड़ा नीक.....

बैटरी से चले ई इनवर्टर से चले,
ठंडा दे हवा चले धीमा भले।
मथवा पिराए क भईल ई दवा।।
बड़ा नीक.....

रचना- अरविन्द कुमार सिंह (स०अ०)
प्रा० वि० धवकलगंज
बड़ागाँव, वाराणसी

मिशन शिक्षण संवाद गीतांजलि सृजन

माह जुलाई 2025

लोकगीत- कजरी

सइयां सावन में झुमका दिलाइ द.....

790

सइयां सावन में झुमका दिलाइ द,
सारनाथ घुमाइ द ना।

झुमका चार तल्ला वाला,
रहे ढंग में निराला।
हमें दिल्ली शहर से मंगाइ द।
सारनाथ.....

झुमका पहिन मेला जाइब,
सावन झूला झूल पाइब।
सारंगनाथ जी के दर्शन कराइ द।
सारनाथ.....

देखब म्यूजियम, स्तूप,
अऊर चिड़ियाघर भी खूब।
बाटी-चोखा प्रसिद्ध जो खिलाइ द।
सारनाथ.....

बौद्ध मंदिर अनेक,
देखब कलाकृति विशेष।
कुल्हड़ वाली चायिया के पियाइ द।
सारनाथ.....

रचना- अरविन्द कुमार सिंह (स०अ०)
प्रा० वि० धवकलगंज
बड़ागाँव, वाराणसी

मिशन शिक्षण संवाद गीतांजलि सृजन

माह जुलाई 2025

लोकगीत- अवधी

माई क दुलारी बेटी, बाबा क प्यारी बेटी.....

791

माई क दुलारी बेटी, बाबा क प्यारी बेटी,
चललीं पिया जी के साथ।
झर-झर नीरवा बहेला देखा अँखिया से,
मनवाँ भईल बा उदास।

लिपट-लिपट रोवें माई के हो गरवा,
सखिया-सहेलियन क भूली कहाँ प्यरवा।
माई समझावं लेके आसरा बिस्वसवा के,
बेटी सुना हो मोर बात।
माई क दुलारी.....

जिन रोवा बेटी ई विधि क विधनवाँ,
छूटल नइहर नया मिलल सपनवाँ।
घरवा बसल नया, लजिया के रखिह,
मन से निभइह हर काज।
माई क दुलारी.....

सासू जी के हमरा समान नित मनिह,
अपने ननदियन के खूब प्यार देइह।
जेठ-जेठानी मान देवता समान कर,
मनिह ससुर जी के बाप।
माई क दुलारी.....

बिरना सनेस लेव जब घरे जइहँ,
मनवाँ के तोहरे हर चीजिया पठइब।
दे दिह ओनके हो आपन सनेसवा,
रखिह न कउनो मलाल।
माई क दुलारी.....

रचना- अरविन्द कुमार सिंह (स०अ०)
प्रा० वि० धवकलगंज
बड़ागाँव, वाराणसी

मिशन शिक्षण संवाद
गीतांजलि सृजन
माह जुलाई 2025

लोकगीत

792

बजाय द हे माई वीणा के धुनवां.....

बजाय द हे माई वीणा के धुनवाँ,
आय गइली मैया तोहरे सरन मा।

हंसा सवरिया पर खूब सोहेलू,
उज्ज्वल रूपवा ले मनवाँ मोहेलू।
बड़ा नीक लागेला पद्म आसनवाँ।
आय गइली.....

माला स्फटिक के एक हाथ सोहे,
वीणावादिनि तोहार रूप मन मोहे।
ज्ञानदात्री मैया दे द हमें ज्ञानवाँ।
आय गइली.....

केतनन के बुद्धि-ज्ञान दे के संवरलू,
कला औ संगीत दे केतनन के उबरलू।
स्तुति करीला करवा जोरि धरि धियनवां।
आय गइली.....

चेतन रहे मनवाँ दुख बिसराई,
आशीष अइसन तोहार गुन गाईं।
रहिया सँवार देहू इह अरमनवाँ।
आय गइली.....

रचना- अरविन्द कुमार सिंह (स०अ०)
प्रा० वि० धवकलगंज
बड़ागाँव, वाराणसी

शिक्षा का उत्थान
शिक्षक का सम्मान
मानवता का कल्याण
मिशन शिक्षण संवाद
गीतांजलि सृजन
माह जुलाई 2025

लोकगीत

पेड़वा लगावा भइया जी भर के.....

793

पेड़वा लगावा भइया जी भर के,
लभवा अनेक दे लें जीवन में।

रहिया पे चलत-चलत, थक जब जइब,
छहवां में पेड़वा के सुख-चैन पइब,
फलवा के खाई मन तृप्त होखे।
लभवा अनेक.....

पेड़े के लकड़िया से बने फर्निचरवा,
पतिया औ छलवा से होवे उपचरवा।
धारमिक कारज के मूल हईं ये।
लभवा अनेक.....

शुद्ध करें वातावरण देई आक्सीजनवां
सीओटू के ले बनावें आपन भोजनवां।
दें सुगंध सोखें धूर भरि-भरि के।
लभवा अनेक.....

एक पेड़वा के लाभ,चार पीढ़ी पावे,
दुनिया में कुछ ना अइसन लाभ देई जावे।
गलोबल वार्मिंग रोकें धरती पे।
लभवा अनेक.....

रचना- अरविन्द कुमार सिंह (स०अ०)
प्रा० वि० धवकलगंज
बड़ागाँव, वाराणसी

शिक्षा का उत्थान
शिक्षक का सम्मान
मानवता का कल्याण
मिशन शिक्षण संवाद
गीतांजलि सृजन
माह जुलाई 2025

लोकगीत- कजरी

मनवाँ करे मुरली श्याम क बजाय लेईं.....

794

मनवाँ करे मुरली श्याम क बजाय लेईं,
गोकुल पधार लेईं ना।

घूमीं जमुना के तीरे,
संग में ग्वाल मीरे-मीरे।
गेंद खेल क हमहूँ बहार लेईं,
गोकुल पधार लेईं ना।

अल्हड़बाजी करीं खूब,
करीं करतब अबूझ।
पहाड़ गोवर्धन हमहूँ उठाय लेईं,
गोकुल पधार लेईं ना।

जाईं जसोमति द्वार,
पाईं ढेर सारा प्यार।
गोकुल बाला से रसिया रचाय लेईं,
गोकुल पधार लेईं ना।

होय मन में उल्लास,
वृंदावन जाए क खास।
पावन धामवाँ से जियरा लगाय लेईं,
गोकुल पधार लेईं ना।

रचना- अरविन्द कुमार सिंह (स०अ०)
प्रा० वि० धवकलगंज
बड़ागाँव, वाराणसी

मिशन शिक्षण संवाद गीतांजलि सृजन

माह जुलाई 2025

लोकगीत

हे सजनी तोहहीं हो सुख क अधरवा.....

795

अइलें जिनिगिया में चाँद और तरवा,
सँवरल हो घरवा-दुअरवा हमार।
हे सजनी तोहहीं हो सुख क अधरवा,
तोहहीं हऊ सुख-चैन हमार।

सजनी तू जबसे जिनिगिया में अइलू,
सथवा दे हर काम सफल करइलू।
अपनइलू असीम त्याग और समर्पण,
सचमुच लगे जइसन सुखद बयार।।
हे सजनी.....

सातों फेरा क वचनवाँ निभइलू,
घर-परिवारवा के उन्नत बनइलू।
कइलू हो नेक काम खातिर परिवरवा,
भईल हो हमरो सपनवाँ साकार,
हे सजनी.....

रंग-ढंग समजवा के अच्छे से जनलू,
मान-मर्यादा क ध्यनवाँ तू देहलू।
देहलू सनेहिया क छहियां तू सबके,
तोहहीं से जिनगी भईल उजियार।
हे सजनी.....

धरम-करम करके हऊ हितकारी,
तोहहीं से हमरे में हवुए खुमारी।
तोहहीं से समृद्धि घरवा के बाटे,
धन्य भईल पा के तोह किस्मत हमार,
हे सजनी.....

रचना- अरविन्द कुमार सिंह (स०अ०)
प्रा० वि० धवकलगंज
बड़ागाँव, वाराणसी

मिशन शिक्षण संवाद
गीतांजलि सृजन
माह जुलाई 2025

लोकगीत

796

बाबा साहेब ई पुन्य काम कइ गइलें.....

सबके समता औ सम्मान देइ गइलें।
बाबा साहेब ई पुन्य काम कइ गइलें।।

देश में का हाल रहल,
दबे कुचलन के।
निम्न स्तर रहल हो,
ओनके जीवन के।।
लेइ कलमियाँ के संविधान लिख गइलें।
बाबा साहेब.....

हक सबकर सबके,
दिलाए संविधान से।
बचाए सबको,
सामाजिक अपमान से।।
एक बराबर अधिकार देइ गइलें।
बाबा साहेब.....

शिक्षित बन क,
दे गइलेन संदेशा।
संघर्ष कर के,
कहलेन हमेशा।।
भारत देशवा के गौरव ऊ बन गइलेन।
बाबा साहेब.....

नाम लेत देशवा बा,
ओनकर सम्मान से।
'भारत रत्न' विभूषित,
बाबा साहेब नाम रे।।
राष्ट्र सर्वोपरि के बुलन्द कइलें।
बाबा साहेब.....

रचना- अरविन्द कुमार सिंह (स०अ०)
प्रा० वि० धवकलगंज
बड़ागाँव, वाराणसी

मिशन शिक्षण संवाद गीतांजलि सृजन

माह जुलाई 2025

लोकगीत

आज हर्षित ई मनवाँ भईल बा.....

797

आज हर्षित ई मनवाँ भईल बा,
देखि गुरुजन सुरतिया के प्यारी।
दिल के हर एक कली खिल गइल बा,
पा के आभा अलौकिक औ न्यारी।।

हुए एकत्र हम जो यहाँ पर,
गुरुजनों के गुणों को उतारें।
ले के आशीष अपने बड़ों का,
अपने जीवन को नित-नित सँवारे।।
होगा जीवन सफल अब हमारा,
सुदृढ़ जीवन की कर लें तैयारी।
आज हर्षित.....

ज्ञानदाता औ संस्कृति के वाहक,
रहें इनसे जुड़ें हम ये चाहत।
राष्ट्रनिर्माता जिनको कहें हम,
आप संस्कारों के उच्च वाहक।
आज आई सुमंगल घड़ी है,
दिव्य दर्शन बड़ा सुखकारी।
आज हर्षित.....

नेह और स्नेह की हैं सौगातें,
ये मिलन और जुदाई की बातें।
आप दिल में बसे हैं हमेशा,
होंगी राहों पे भी मुलाकातें।।
स्वस्थ जीवन जिएँ पूज्य गुरुवर,
ये दुआ आज के दिन हमारी।।
आज हर्षित.....

रचना- अरविन्द कुमार सिंह (स०अ०)
प्रा० वि० धवकलगंज
बड़ागाँव, वाराणसी

मिशन शिक्षण संवाद गीतांजलि सृजन

माह जुलाई 2025

लोकगीत

798

करीला हमहूँ किसानी हो.....

खेतवा में जम के पसिनवाँ बहाईं,
करीला हमहूँ किसानी हो।
देसवा से अपने पिरितिया लगाईं,
देइके फसलिया निसानी हो।।

चौड़ा रहे अपने देसवा के सीना,
जाने विदेसवा ई हवुए नगीना।
करमवीर सच्चा हई हम वतन के,
पाला पड़े चाहे पानी हो।।
खेतवा में जम के.....

दिन दुपहरिया में बरहो महिनवां,
घर परिवरवा के लेइ अपने संगवां।
दुख तकलिफिया भुलाई तन मन के
खेतिया के करीं निगरानी हो।।
खेतवा में जम के.....

गेहूँ, चना, सरसों, मटर उगाईं,
अरहर, गन्ना, सब्जी सब दिन लगाईं।
धनवाँ के बलियन में, आलू के बोरियन में,
किसमत के लेखा पहचानी हो।।
खेतवा में जम के.....

चाह बाटे देसवा के होवे तरक्की,
गउआं विकास कर बने सड़क पक्की।
भारत कऽ जय-जय करे सारी दुनिया,
देखि के सबके हैरानी हो।।
खेतवा में जम के.....

रचना- अरविन्द कुमार सिंह (स०अ०)
प्रा० वि० धवकलगंज
बड़ागाँव, वाराणसी

शिक्षा का उत्थान
शिक्षक का सम्मान
मानवता का कल्याण
मिशन शिक्षण संवाद
गीतांजलि सृजन
माह जुलाई 2025

भारतीय सेना

तर्ज़- आज हिमालय की चोटी से.....

799

देश के प्रहरी सजग सबल हैं,
फिर क्या होना है?
थर-थर काँपे दुश्मन जिससे,
हिन्द की सेना है।।

तूफानों से निश दिन खेले,
लहरों को भी पार करे।
दुश्मन आँख दिखाए जब-जब,
जम कर उस पर वार करे।।
शौर्य-पराक्रम में आगे है,
साथ तो देना है।
थर-थर काँपे.....

पृथ्वी, अग्नि सी सजी मिसाइलें,
आकाश, त्रिशूल भी साथ।
एस- 400, चक्र सुदर्शन,
भी आया अब इनके हाथ।।
राफेल, तेजस की गूँज से,
दुश्मन बौना है।
थर-थर काँपे.....

आई एन एस विक्रांत अरब,
सागर में जिसका पहरा दे।
भीष्म टैंक, ब्रह्मोस मिसाइल,
नेस्तनाबूत शत्रु कर दे।।
आतंक को ध्वस्त करे,
संदेश ये देना है।
थर-थर काँपे.....

रचना- अरविन्द कुमार सिंह (स०अ०)
प्रा० वि० धवकलगंज
बड़ागाँव, वाराणसी

देशभक्ति गीत

तर्ज़- जनम-जनम का साथ है ....

800

आज हिन्द की धरती से,
हम सबने है ललकारा।
दुश्मन चाहे जहाँ छिपा हो,
होगा वारा न्यारा।।

हम दधीचि के ही वंशज हैं,
वंशज हैं श्री कृष्ण के।
श्री राम की महिमा गाते,
देश के वासी मिल के।।
अद्भुत भारत संकल्पित है,
विश्वगुरु की जयकारा।
दुश्मन चाहे ....

विज्ञान, प्रौद्योगिकी में है,
गूँज हमारी अम्बर तक।
जय-जवान, जय-किसान नारा,
भरता हम सबमें है बल।।
विश्व पटल पर होती चर्चा,
भारत कितना प्यारा?
दुश्मन चाहे...............

हर पल हम मिल करें तरक्की,
सर्वधर्म समभाव से।
रहते मिलकर देश के वासी,
रहते सब सद्भाव से।।
नभ-जल-थल में फैली आभा,
देखे विश्व है सारा।
दुश्मन चाहे.................

रचना- अरविन्द कुमार सिंह (स०अ०)
प्रा० वि० धवकलगंज
बड़ागाँव, वाराणसी

मिशन शिक्षण संवाद गीतांजलि सृजन

माह जुलाई 2025

वाराणसी महिमा गीत

801

तर्ज़- जनम-जनम का साथ है .....

बाबा विश्वनाथ की नगरी,
पावन धाम हमारा।
लहर विकास की पग-पग दौड़े,
अद्भुत भाईचारा।।

वरुणा और असी नदियों के,
संगम पर यह स्थित।
मन मोहे सैलानियों के,
यहाँ की हर परिस्थिति।।
पावन नगरी अति प्राचीन है,
सबकी आँख का तारा।
बाबा विश्वनाथ.....

संकटमोचन, दुर्गा मंदिर,
काल-भैरव हैं विराजे।
दर्शनीय, ऐतिहासिक स्थल,
सारनाथ मन लागे।।
ज्ञान आलोक प्रकाशित पल-पल,
शिक्षा का उजियारा।
बाबा विश्वनाथ.....

प्रेमचंद, कबिरा जन्मस्थली,
पी एम लोकसभा क्षेत्र।
अव्वल स्थिति प्रदेश भर में,
मिले चिकित्सा सर्वश्रेष्ठ।।
महिमा जिसकी विश्व में फैली,
धन्यभाग ये हमारा।
बाबा विश्वनाथ.....

रचना- अरविन्द कुमार सिंह (स०अ०)
प्रा० वि० धवकलगंज
बड़ागाँव, वाराणसी

मिशन शिक्षण संवाद
गीतांजलि सृजन
माह जुलाई 2025

लोकगीत- अवधी

नेहिया से भर देइह झोलिया हमार माई.....

802

नेहिया से भर देइह झोलिया हमार माई।
करीला हो तोहसे गुहार।
अँचरा फइलाय माई करीं हो अरजिया,
रख लेइह हमरो तू लाज।।

कुशल रहे माई, घर परिवरवा।
संग जुड़ल पशु-पक्षी तोहरे असरवा।।
कइ द सनेहिया क बारिश हो माई,
धन्य होय जिनगी हमार।
नेहिया से.....

बिटिया, पतोह, नातिन, सब खुशहाल हों।
लड़िका और नात मोरें, चलें सुंदर चाल हो।।
भरपूर दिह माई खेतिया-किसनियाँ में,
चुल्हवा जरे भोरे-साँझ।
नेहिया से .....

तोहसे ही सब दिन पिरितिया लगइब,
जतन से माई तोहें चुनरी चढ़इब।
हर लेहू माई मोर सारी विपतिया के,
फेरिह न हमसे निगाह।
नेहिया से.....

रचना- अरविन्द कुमार सिंह (स०अ०)
प्रा० वि० धवकलगंज
बड़ागाँव, वाराणसी

मिशन शिक्षण संवाद गीतांजलि सृजन

माह जुलाई 2025

लोकगीत- कजरी

वीर अब्दुल हमीद

803

जन्मा एक लाल बनके हिन्द क प्रहरिया,
स्थान गाजीपुर शहरिया ना।

बचपन से शौक रहल, कुश्ती, पहलवानी,
निशाना लगावे जेकर, नाहीं केहू सानी।
उस्मान, सबीना क अनमोल निशानी,
देखि करतबवा भयल हैरानी।।
धामूपुर गउआँ क बाँका नौजवनवाँ,
फौजवा में करे नौकरिया ना।

पैंसठ में शुरू भारत, पाक की लड़ाई,
सेनवाँ में आगे तैनात था सिपाही।
खेमकरण सेक्टर में जंग मची भाई,
तरनतारन जिला पंजाब में कहाई।।
गोलिया चलावें पापी पाकी दुश्मनवाँ,
देशवा में क्रोध क लहरिया ना।

लेइके अमेरिका क पैंटन टैंक जंग में,
गरजे दुश्मन सोच के अजेय हई रण में।
योद्धा पड़े हैं सब देश के विकल में,
उन्नत हथियार नहीं अपने शरण में।।
गन माउंटेड जीप लेके चला बलवनवाँ,
पस्त कर बैरियन क रहिया ना।

एकदम अचूक ले निशाना देई मारा,
गिरा गोला टैंक ध्वस्त शत्रु फुंफकारा।
आगे बढ़े टैंकवन के फिर ना कोई चारा।।
ध्वस्त हुए टैंक सब धुँए का ही नजारा।
भगदड़ मचाया पाकिस्तानी फौजवा में,
लड़े बर्बरीक सा लड़इया ना।

टैंक कब्रगाह बना 'असल अताड़' हो,
पीछा करे पापियन क देशवा के लाल हो।
गोलिया से घायल ज्वान लड़े बेमिसाल हो,
अभिमन्यु जइसा करे रण में धमाल हो।।
देश पे न्योछावर ज्वान फइलल किरितिया,
गाव लें 'दरोगा' जी कजरिया ना।

रचना- अरविन्द कुमार सिंह (स०अ०)
प्रा० वि० धवकलगंज
बड़ागाँव, वाराणसी

मिशन शिक्षण संवाद
गीतांजलि सृजन
माह जुलाई 2025

लोकगीत- कजरी

नशा मुक्ति अभियान

804

अबके सावन में हो मोर सइयाँ,
तोहके बली बनाइब ना।

काजू, पिस्ता पीस पकाइब,
गाढ़ा लस्सी रोज पियाइब।
रोज सबेरवाँ हम टहलाइब,
मक्खन, मिसरी खूब चटाइब।।
दारू पी मतवाला भइल,
ओके हम छोड़ाइब ना।

नीम क पत्ती रोज चबइब,
जूस करइला क घोंटवइब।
जैतूनवाँ क तेल लगइब,
खेत क सब्जी खूब खियइब।।
पचहत्तर रुपिया ना देब,
चाहे जो हो जाई ना।

मेहना मारें गाँव क नारी,
पातर तूँ हय हम हई भारी।
विपति बोलावल आयल सारी,
नशा तोहार देवावै गारी।।
दशा सुधरब जब तू आपन,
तब सबके बताइब ना।

मंहगी का से का हो गइलँ,
सम्पति देखा खूब बनइलँ।
लड़िका-बच्चा भी पढ़इलँ,
'दरोगा' जइसन यशवा पइलँ।।
सुखद रही अपनो परिवरवा,
कइके हम देखाइब ना।

रचना- अरविन्द कुमार सिंह (स०अ०)
प्रा० वि० धवकलगंज
बड़ागाँव, वाराणसी

मिशन शिक्षण संवाद गीतांजलि सृजन

माह जुलाई 2025

लोकगीत

805

कइल भइया हो मन से पढ़ाई.....

कइल भइया हो मन से पढ़ाई,
नाम, शोहरत इह ही दिलाई।
तर्कक्षमता व सोच रही आगे,
एह जमाना क रूप दिखि जाई।।

ज्ञान-विज्ञान से होब परिचित,
देश-दुनिया समझ होब हर्षित।
वास्तविकता क देखब नजारा,
जान पइब का हौ खास चर्चित।।
हर शंका समाधान होई,
रस अमिय के भी जइब तू पाई।
कइल भइया.....

का सही और का-का गलत हौ,
एहि समजवा में जो भी चलत हौ।
जान पइब नवीन औ पुरातन,
मान-मर्यादा कइसे बढ़त हौ।।
पूरा करब हो हर एक सपना,
होई तोहार सगरों बड़ाई।
कइल भइया.....

पाइ जइब मुकाम बड़ा सुन्दर,
जागी मनवाँ में उल्लास अंदर।
नाम देशवा, समजवा में करब,
दिखी तोहके हो खुशहाल मंजर।।
चाँद, तारा भी शीशवा झुकइहँ,
ई जिनिगिया सफल होइ जाई।
कइल भइया.....

रचना- अरविन्द कुमार सिंह (स०अ०)
प्रा० वि० धवकलगंज
बड़ागाँव, वाराणसी

मिशन शिक्षण संवाद गीतांजलि सृजन

माह जुलाई 2025

लोकगीत- सोहर

लोकतंत्र उत्सव मनाईं.....

806

लोकतंत्र उत्सव मनाईं,
करतबवा निभाईं हो ना।
भइया चला-चलीं वोटिया दे आईं,
नेता चुनि आईं हो ना।।

लोगवा से जगमग हौ देशवा,
जानेला ई विदेशवा हो ना।
भइया भूलिह न आपन अधिकरवा,
बटनियाँ दबाईं हो ना।।
लोकतंत्र उत्सव.....

सरकार मने के बनाईं,
देव के वोट जाईं हो ना।
दिहले एक वोट होला बहुत कुछ,
प्रतिशत बढ़ाईं हो ना।।
लोकतंत्र उत्सव.....

गीतवा से दे लें संदेशवा,
अरविन्द सिंह चहेतवा हो ना।
भइया भूलिह न वोटिया क दिनवाँ
जागरूक कहाईं हो ना।।
लोकतंत्र उत्सव.....

रचना- अरविन्द कुमार सिंह (स०अ०)
प्रा० वि० धवकलगंज
बड़ागाँव, वाराणसी

मिशन शिक्षण संवाद गीतांजलि सृजन

माह जुलाई 2025

लोकगीत- चैता

आइ गइलें फिरसे चुनउवा हो रामा.....

807

आइ गइलें फिर से चुनउवा हो रामा,
वोटिया दे आईं।

हर एक पारटी करत परचरवा,
नेता लोग वोट माँगें घरवा-दुअरवाँ।
बहत बाटे फागुनी बयार हो रामा,
वोटिया दे आईं।।
आइ गइलें.....

पाँच साल बाद हाथे मौका हौ आयल,
लोकतंत्र उत्सव मन में समायल।
मनवाँ के बटन दबाईं हो रामा,
वोटिया दे आईं।
आइ गइलें.....

देई वोट, प्रतिशत वोट क बढ़ाईं,
नेता चुनीं, सरकार मन क बनाईं।
होई विकास के कामवाँ हो रामा,
वोटिया दे आईं।
आइ गइलें.....

रचना- अरविन्द कुमार सिंह (स०अ०)
प्रा० वि० धवकलगंज
बड़ागाँव, वाराणसी

मिशन शिक्षण संवाद
गीतांजलि सृजन
माह जुलाई 2025

लोकगीत- कजरी

सइयाँ चला-चलीं वोटिया के देइ आईं.....

808

सइयाँ चला-चलीं वोटिया के देइ आईं,
काम नीक कइ जाईं ना।

दुलरी काकी देखा गइलीं,
सविता भाभी भी दे अइलीं।
चला हमहन भी बूथ पे पहुँच जाईं,
काम नीक कइ जाईं ना।।
सइयाँ चला.....

बतिया तोहार ही मनली,
तबके वोटिया नाहीं देहली।
लेकिन एदवाँ जरूर चला चलल जाईं,
काम नीक कइ जाईं ना।।
सइयाँ चला.....

कहँ साहब बी एस ए,
डी एम, एस डी एम सब मिलके।
वोट प्रतिशत के एदवाँ बढ़ाय जाईं,
काम नीक कइ जाईं ना।।
सइयाँ चला.....

जबसे अखबार पढ़ली,
वोटिया हौ जरूरी जनली।
मिलल मौका हौ एके अब ना गँवाईं,
काम नीक कइ जाईं ना।।
सइयाँ चला.....

रचना- अरविन्द कुमार सिंह (स०अ०)
प्रा० वि० धवकलगंज
बड़ागाँव, वाराणसी

मिशन शिक्षण संवाद गीतांजलि सृजन

लोकगीत

माह जुलाई 2025

809

नया-नया मतदाता बनली.....

नया-नया मतदाता बनली,
फर्ज निभाइब हो।
देव वोटिया जरूर हमहूँ,
बूथवा जाइब हो।।
जहाँ के सारे लोगवन के,
हमहूँ दिखलाईब हो।
देव वोटिया.....

वोट क परची हाथे में ले,
नए शौक से जइब।
वोटिया के दिनवाँ टाइम से,
वोटिया दे के अइब।।
दादी, अम्मा, भाभी के,
संगवाँ में जाईब हो।
देव वोटिया.....

लोकतंत्र में केतना अद्भुत,
अधिकार मिल गइल।
अपने मन के बटन दबा के,
प्रतिशत वोट बढ़इब।।
पावन पर्व में देइके वोटिया,
हम हरषाइब हो।
देव वोटिया.....

रचना- अरविन्द कुमार सिंह (स०अ०)
प्रा० वि० धवकलगंज
बड़ागाँव, वाराणसी

मिशन शिक्षण संवाद गीतांजलि सृजन

माह जुलाई 2025

लोकगीत- लचारी

मतदाता जागरूकता गीत.....

810

लोकतंत्र उत्सव मनाईं,
चला हो सखी वोटिया दे आईं।
वोट देइ-देइ हरषाईं,
चला हो सखी वोटिया दे आईं।।

आपन अधिकार वोट देना जरूरी,
नाहीं रहे कउनो अब मजबूरी।
मिल के वोटिया क प्रतिशत बढ़ाईं,
चला हो सखी.....।।

वोटिया देव हो गईल बा आसान हो,
हर कोई बूथवा पे करीं मतदान हो।
नाहीं कउनो भरमवाँ में आईं,
चला हो सखी.....।।

वोटिया देईं ओके जे मन के भावे,
नाहीं केहू के बहकावे में आवँ।
बटन अपने मन के दबाईं,
चला हो सखी.....।।

अच्छी सरकार बन करीं योगदान हो,
एही में बाटे लोकतंत्र क शान हो।
जागरूक मतदाता कहाईं,
चला हो सखी.....।।

रचना- अरविन्द कुमार सिंह (स०अ०)
प्रा० वि० धवकलगंज
बड़ागाँव, वाराणसी

मिशन शिक्षण संवाद गीतांजलि सृजन

माह जुलाई 2025

लोकगीत

811

जागरूक मतदाता बनके.....

जागरूक मतदाता बनके,
आपन फर्ज निभाय।
जाय भइया, जाय बहिनी,
वोटिया दे के आय।।

बात बड़े सौभाग्य क हवुए,
मिलल बा वोटिया के अधिकार।
देईब वोट हौ बहुत जरूरी,
तब बनी अच्छी सरकार।।
घर पर रुकिह नाहीं ओह दिन,
पोलिंग बूथ पे जाय।
जाय भइया.....

काम-काज सब छोड़ि के पहिले,
नेक काम तू करिह।
केहू के बहकावे में ना,
ई वी एम बटन दबइह।।
नेता चुनिह अपने मन क,
बात रहीं बतलाय।
जाय भइया.....

एक-एक मिल करके वोटिया,
हो संख्या में भारी।
एक वोट क बड़ी महत्ता,
जानत दुनिया सारी।।
अधिकार क कइ प्रयोग तू,
आपन दम दिखलाय।
जाय भइया.....

रचना- अरविन्द कुमार सिंह (स०अ०)
प्रा० वि० धवकलगंज
बड़ागाँव, वाराणसी

मिशन शिक्षण संवाद
गीतांजलि सृजन
माह जुलाई 2025

लोकगीत- फाग

वोटिया देव जाब.....

812

वोटिया देव जाब, वोटिया देव जाब,
नाहीं रुकब हम घरवाँ में।
कर के बाटे नेता क चुनाव,
नाहीं रुकब हम घरवाँ में।।

पाँच साल बाद बड़ा मौका हौ आयल,
वोटिया क दिन सुनके मन हरषायल।
भूले न भूली हो रही ई याद,
नाहीं रुकब हम घरवाँ में।।
वोटिया देव.....

मन के बटनियाँ पे अंगुली दबाइब,
नाहीं केहू के बहकावे में आइब।
चुनबे हो नेता जे मनवाँ के भाय,
नाहीं रुकब हम घरवा में।।
वोटिया देव.....

बाटे बड़ा शुभ वोटिया के दिनवाँ,
हर काम छोड़ि सब करीं मतदनवाँ।
सबही से कहीं केहू न भुलाय,
नाहीं रुकब हम घरवा में।।
वोटिया देव.....

रचना- अरविन्द कुमार सिंह (स०अ०)
प्रा० वि० धवकलगंज
बड़ागाँव, वाराणसी